गुल्जार हुई अवध की धरनी

समय की पुकार,मानवता की जरूरत, भगवान का इशारा, दादियों का संकल्प,प्रकृति की चेतावनी, हम सबके कर्तव्य ने मेगा प्रोग्राम करने के लिए हम सबको बाध्य कर दिया और कार्यक्रम बेहद सफल सम्पन्न हो गया।बड़ी दादी जी को जब से मेगा कार्यक्रम का संकल्प आया, तब से लेकर अनेकों बार लखनऊ में प्रोग्राम की योजनायें बनी परन्तु हर बार कार्यक्रम पोस्टपोन हुआ,पर इस वैश्विक उत्सव में एक बार भी किसी के मन में, कहीं भी, कभी भी कोई कमजोर संकल्प नहीं आया, इसका एक मुख्य कारण शक्ति सेना की कोहिनूर,भारत व भगवान के हृदय सम्राट, लखनऊ के रहबर,चैतन्य शिवालय, विधाता की अनुपम कृति, संगम की अनमोल धरोहर, अन्तर्मुखता व निस्संकल्पता की बेमिसाल जरदार, गॉड के लैण्ड लार्ड, रूहानियत की शहंशाह, भगवान व इंसान के मध्य सेतु, सरलता व दिव्यता की अवतार, श्रीमत की तस्वीर, अपनी हर चलन से तावीर बदलने वाली, हर गुलशन को गुल्जार करने वाली, हर हृदय को मोहने वाली आदरणीय गुल्जार दादी जी के आगमन की खबर। नहीं भगवान तो भगवान का रथ ही सही, जैसे रामायण में दिखाते हैं कि भरत ने राम के चरण पादुकाओं को ही राम का प्रतिनिधि मान कर 14 वर्ष सफलता पूर्वक राज्य चलाया।इसी प्रकार प्रभु वाहन के आने की बात ही हरेक को नित नई ऊर्जा का संचार कर जैसे उमंगों के पंख लगा रही हो ।सब एक मत,एक लगन व एक संकल्प से चल रहे थे।3 मास से सबके मन यही बात अनवरत दृढ़ता के साथ घूम रही थी कि कैसे भी करके यह कार्यक्रम हमें अच्छे से अच्छा करना है हमारे पास स्वयं भगवान का चैतन्य रथ आ रहा है।लौकिक दुनिया में तो जब जगन्नाथ का रथ निकालते हैं तो बड़े–बड़े धर्मनेता भी उसको छूने के लिए लालायित रहते हैं यह तो उसके द्वारा चुना हुआ उसका ही रथ था। भगवान का कार्य है भगवान साथ है भगवान का रथ आ रहा है इस बात ने सबके मन में यह विचार दृढ़ता के साथ बैठा दिया था, कि कार्य हुआ पड़ा है हमें सिर्फ हाथ लगाना है, और यह पूर्णतया सच सिद्ध हो गया,कि जहॉ भी जिससे मिले वह जैसे हमारे ही इन्तजार में बैठा था,सबने बड़े दिल से अपना पूरा सहयोग दिया। 2 मास की अथक मेहनत ने कार्य व समय की दूरियॉ समाप्त की और कार्यक्रम मूर्तरूप होने लगा ।

1– **झूम उठा मन मयूर अवध का –** वट वृक्ष में कभी पतझड़ नहीं होता, इसी प्रकार कल्पवृक्ष में भी कभी पतझड़ नहीं होता,इसका कारण आध्यात्मिकता का वृक्ष कभी पतझड़ को नहीं प्राप्त होता परन्तु उसमें तूफान बहुत लगते हैं शिथिलता भी आ जाती है। दादी के आते ही लखनऊ भी अपनी नई रंगत में आ गया, हो भी क्यों नहीं। 2500 वर्ष माया की ऑधी के थपेड़े खाते–2,नवाबों एवं यवनों का ताप सहते–2,अॅग्रेजों की गुलामी के ओलों का कहर झेलते–2,ये बरबादे चमन लखनऊ अपनी हर रवॉस में भगवान से उसकी शफकत की हर आरजू कर रहा था।ठीक आज से पचपन वर्ष पूर्व भगवान की इनायत व करम ने उस मुरझाये व अविकसित गुलशन में अध्यात्म का बीज डाल शीतल ज्ञान वर्ष कर झुलसते पौधों में जैसे प्राणों का पुनः संचार कर दिया हो,वह बीज आज विशाल वट वृक्ष चुका है जिसकी हरीतिमा व शीतल छॉव दूर–2 तक फैल चुकी है व हरेक को आकर्षित कर रहा है परन्तु अपने माली का सानिध्य हरेक जीवन पर्यन्त चाहता है जैसे माना कि बड़े पेड़ को रोज पानी देने की आवश्कता नहीं होती पर बरसात के पानी का इन्तजार हर पेड़ को पूरे वर्ष रहता है व हर पेड़ की

जरूरत होती है। लखनऊ के गुलशन को भी अपने कुशल माली से मिले आधी सदी बीत गयी। वर्षों से आने के इन्तजार में ऑखें बिछाये अपलक निहारता रहा और आज जब आने की खबर मिली तो उसके वात्सल्य की करूणा की बूँदों से ये बरबादे चमन अवध जैसे बहारें चमन हो गया हो । इस नजाकत व तहजीब की नगरी को पूर्ण विश्वास है कि हमें सम्पूर्ण देवत्व का खिताब हमें अपने माली के सानिध्य व आर्शीवाद से मुकम्मल हो सकता है ,इसलिए उसके आने की खबर से ही सारा लखनऊ झूम उठा ।

3–जन–जन तक संदेश– पवित्रतम वातावरण, अति उत्तम भक्ति भावना का श्रेष्ठ समय, नवरात्रि का त्योहार, उस समय चैतन्य देवियों के आने का संदेश मिला जो हर मन की गहराई तक जा पहुँचा। बड़ी श्रद्धा के साथ लोगों ने संदेश दिया और संदेश को सुना भी। हर विधि अपनाई जो कि लोगों को सुनाने का तरीका था।

4– प्रकृति बनी दासी–अक्टूबर का महीना,होना तो चाहिए खुशगवार मौसम,किन्तु भीषण गर्मी, परन्तु अचानक मौसम का मिजाज बदला 3 अक्टूबर से बारिस शुरू हुई जिसका कहीं कोई अन्त नहीं, बारिस भी इतनी तेज कि चारों ओर पानी ही पानी,सारा पंडाल पानी से सराबोर,सारा कारपेट कीचड़ में लथपथ,पूरे मैदान में कीचड़ ही कीचड़, सारी डेकोरेशन की मेहनत बेकार गई।4 अक्टूबर को दो बज गये,पानी रूकने के आसार कहीं दूर–2 तक नजर नहीं आ रहे थे, सबके मन में कार्यक्रम को लेकर एक ही आशंका कि कार्यक्रम कैसे होगा? बाहर वालों के लगातार फोन आ रहे थे कि कार्यक्रम होगा या नहीं? या फिर प्रोग्राम शिफ्ट करेंगे? इतनी जल्दी प्रोग्राम शिफ्ट करना तो असम्भव था लेकिन यह सभी के मन अटल विश्वास था कि प्रोग्राम तो अवश्य होगा, पानी दादी के आते ही बन्द हो जायेगा। और आश्चर्य दादी के लखनऊ पहुंचते ही पानी बिल्कुल बन्द, प्रकृति भी जैसे कि अपने इष्ट के स्वागत में थी, जैसे महाभारत में श्री कृष्ण के जन्म के समय तूफान व बारिश का महाविकराल रूप दिखाते हैं और श्रीकृष्ण के पद कमल touch होते ही प्रकृति एकदम शान्त हो जाती है।ऐसे ही दादी जी के लखनऊ पहुँचते ही सारा वायुमण्डल खुशनुमः प्रकृति बिल्कुल शान्त सहयोगी हो गयी। क्योंकि दो दिन पहले भयंकर गर्मी थी और फिर पानी किन्तु अब सुहानी शाम प्रकृति बिल्कुल दासी बन गयी ।

5–उमड़ा जन सैलाब – खराब हुआ मौसम, Ground में बेहद कीचड़, गीली कुर्सियां फिर भी जनमानस की अपार भीड़, लोग कीचड़ में बैठे रहे और बैठने की जगह न रही तो कीचड़ में ही खड़े हो गये, चारों ओर लोग खड़े रहे, जिसको जहां जगह मिली वह वहां ही खड़ा हो गया, इतने खराब मौसम के बाद, इतने खराब Ground में इतनी भीड़ इकट्ठी होगी जिसका किसी को भी विश्वास नहीं था। लेकिन अपार जन समूह अविश्यसनीयता पर भारी पड़ रहा था,लोग कीचड़ में बैठे खिले कमल की नजर आ रहे थे।सारी सभा निश्चिन्त होकर दत्तचित एकाग्र बैठी रही पूरा कार्यक्रम देखकर सन्तुष्ट होकर गये। अब तक के सभी कार्यक्रमों को इस कार्यक्रम ने इतने खराब मौसम के बाद भी फीका कर दिया।

6– लखनऊ हुआ निहाल – दादीजी ने जहॉ भी कदम रखे वहॉ के लोग निहाल हो गये ,हर ओर बहार छा गयी।जानकीपुरम् में भी नये भवन का उद्घाटन करने दादी जी सिर्फ 10 मि0 के लिए

आई परन्तु जैसे खुशियों की बरसात कर गयी, हर व्यक्ति खुशियों से झूम उठा, निहाल हो गया, दादी जी के वायब्रेशन ही लोगों को रोमांचित कर रहे थे और लोगों को खुशी के आसूँ आ रहे थे लोगो को आज तक भी अविश्वसनीय अनुभूति भुलायें नहीं भूलती, जबकि दादीजी पर्सनल किसी से भी नहीं मिलीं फिर भी हर व्यक्ति मालामाल नजर आ रहा था जैसे कि खुशी के खजाने के साथ कारून के खजाने की चाबी भी हरेक के हाथ लग गयी हो!

7– प्रकृतिजीत का प्रत्यक्ष प्रमाण – दादी जी के अवध प्रवास पर प्रकृति अपने सर्वोतम सुहावने व सुखदायी छवि के रूप से दादी जी के आगे नतमस्तक रही,और दादी जी के जाते ही इतनी तेज बरसात शुरू हुई जो कि 24 घंटे तक बन्द होने का नाम ही नहीं लिया,चारों ओर अवध जलमय नजर आ रहा था, यह था परमात्म शक्ति का कमाल, जिस नजारे को देख सारा अवध अचम्भित था। सचमुच में दादी जी सारे अवध को प्रकृतिजीत नजर आयीं। दादी जी का 24 घंटे का प्रवास 55 वर्षो पर भारी पड़ा और हर मन गा उठा, खुशियों से भर दी जिन्दगी हमारी, आपकी बलिहारी प्रभु आपकी बलिहारी ।। ओम शान्ति ।